शिवादित्यमिश्रकृता

# सप्तपदार्थी

पश्नोत्तरमालिकायाम्

अनुवादव्याख्याविचारादिसध्रीचिना


शंयुसाहा



**SADESH**

101B, Vivekananda Road, Kolkata-700 006

ॐ सूचीपत्रम्


গ্রন্থকারের নিবেদন ৩

Bibliography Bibliography ৪

PREFACE ५-१०

सप्तपदार्थीविषयसूची ११-१४

प्रश्नोत्तरसूची १५-२१

Introduction to Saptapadārthī २३-२५

Summary of *Saptapadārthī* २५ -२८

मूलग्रन्थः (प्रश्नोत्थानपूर्वकमुत्तराकारेण)

मूलस्य बङ्गानुवादः टिप्पणीसन्दर्भसहितः २९-२५८

| क्रमाङ्कः | शिरोनाम | पृष्ठम् |
|---|---|---|
| १. | मङ्गलाचरणम् | २९ |
| | ग्रन्थारम्भप्रयोजनम् | ३० |
| २. | पदार्थसंज्ञा | ३० |
| ३. | पदार्थभेदः | ३३ |
| ४. | द्रव्यभेदः | ३६ |
| ५. | गुणभेदः | ३७ |
| ६. | कर्मभेदः | ३९ |
| ७. | सामान्यभेदः | ४० |
| ८. | विशेषभेदः | ४२ |
| ९. | समवायभेदः | ४३ |
| १०. | अभावभेदः | ४४ |
| ११. | पृथिवीभेदः | ४५ |
| १२. | जलभेदः | ४८ |
| १३. | तेजोभेदः | ४९ |
| १४. | वायुभेदः | ५१ |
| १५. | आकाशभेदः | ५५ |
| १६. | कालभेदः | ५६ |
| १७. | दिग्भेदः | ५७ |
| १८. | आकाशाद्युपाधेर्नानात्वम् | ५८ |
| १९. | आत्मभेदः | ५९ |
| २०. | मनोभेदः | ६० |
| २१. | द्रव्यस्य नित्यानित्यत्वे | ६१ |
| २२. | रूपभेदः | ६१ |
| २३. | रसभेदः | ६३ |
| २४. | गन्धभेदः | ६५ |
| २५. | स्पर्शभेदः | ६५ |
| २६. | सङ्ख्याभेदः | ६७ |
| २७. | परिमाणभेदः | ६७ |
| २८. | पृथक्त्वभेदः | ६८ |
| २९. | संयोगभेदः | ६९ |
| ३०. | विभागभेदः | ७० |
| ३१. | परत्वापरत्वयोर्भेदः | ७१ |
| ३२. | बुद्ध्यादेर्भेदः | ७३ |
| ३३. | प्रत्यक्षप्रमाणभेदः | ७४ |
| ३४. | अनुमानभेदः | ७५ |
| ३५. | अवयवभेदः | ७५ |
| ३६. | हेत्वाभासभेदः | ७७ |
| ३७. | संशयविपर्ययभेदौ तर्कस्वप्नौ | ७९ |
| ३८. | प्रमाऽप्रमाभेदौ सविकल्पक-निर्विकल्पकौ | ८० |
| ३९. | प्रत्यभिज्ञादयः | ८१ |
| ४०. | ऊहानध्यवसायौ संशयभेदौ | ८२ |
| ४१. | सुखभेदः | ८३ |
| ४२. | दुःखभेदः | ८३ |

४३. इच्छाभेदः ८४
४४. द्वेषभेदः ८५
४५. प्रयत्नभेदः ८६
४६. गुरुत्वभेदः ८६
४७. द्रवत्वभेदः ८७
४८. स्नेहभेदः ८८
४९. संस्कारभेदः ८८
५०. धर्मभेदः ८९
५१. अधर्मभेदः ९०
५२. शब्दभेदः ९०
५३. नित्यानित्यगुणाः ९१
५४. अव्यापकादिगुणाः ९२
५५. उत्क्षेपणादिभेदः ९३
५६. सामान्यभेदः ९३
५७. प्रागभावादिभेदः ९४
५८. अन्धकारोऽभावभेदः ९४
५९. शक्तिर्द्रव्यादेरन्तर्गता ९५
६०. वैशिष्ट्यस्य स्वरूपम् ९७
६१. ज्ञातताया निरूपणम् ९८
६२. सादृश्यस्य निरूपणम् १०१
६३. लघुत्वं गुरुत्वाभावेऽन्तर्भूतम् १०३
६४. सङ्ख्या गुण एव १०३
६५. कार्यकारणौ नित्यानित्ये १०४
६६. कारणभेदः १०५
६७. अपरभेदस्थितिः १०५
६८. निःश्रेयसनिरूपणम् १०५
६९. दुःखमेकविंशतिः १०७
७०. लक्षणलक्षणम् १०८
७१. द्रव्यलक्षणम् १०९
७२. गुणलक्षणम् ११०
७३. कर्मलक्षणम् १११
७४. सामान्यलक्षणम् ११२
७५. विशेषलक्षणम् ११५
७६. समवायलक्षणम् ११९
७७. अभावलक्षणम् १२१
७८. पृथिवीलक्षणम् १२२
७९. जललक्षणम् १२५
८०. तेजोलक्षणम् १२७
८१. वायुलक्षणम् १२८
८२. आकाशलक्षणम् १३०
८३. काललक्षणम् १३३
८४. दिग्लक्षणम् १३५
८५. आत्मलक्षणम् १३६
८६. मनोलक्षणम् १३८
८७. रूपलक्षणम् १४०
८८. रसलक्षणम् १४१
८९. गन्धलक्षणम् १४२
९०. स्पर्शलक्षणम् १४२
९१. सङ्ख्यालक्षणम् १४३
९२. परिमाणलक्षणम् १४४
९३. पृथक्त्वलक्षणम् १४५
९४. संयोगलक्षणम् १४६
९५. विभागलक्षणम् १४६
९६. परत्वलक्षणम् १४८
९७. अपरत्वलक्षणम् १४८
९८. बुद्धिलक्षणम् १४९
९९. सुखलक्षणम् १५०
१००. दुःखलक्षणम् १५१
१०१. इच्छालक्षणम् १५२
१०२. द्वेषलक्षणम् १५२
१०३. प्रयत्नलक्षणम् १५३
१०४. गुरुत्वलक्षणम् १५४
१०५. द्रवत्वलक्षणम् १५४
१०६. स्नेहलक्षणम् १५४
१०७. संस्कारलक्षणम् १५५
१०८. धर्मलक्षणम् १५५
१०९. अधर्मलक्षणम् १५६
११०. शब्दलक्षणम् १५६

१११. उत्क्षेपणलक्षणम् १५८
११२. अपक्षेपणलक्षणम् १५८
११३. आकुञ्चनलक्षणम् १५८
११४. प्रसारणलक्षणम् १५९
११५. गमनलक्षणम् १५९
११६. जातेर्भेदत्रयलक्षणम् १६०
११७. प्रागभावस्य लक्षणम् १६१
११८. प्रध्वंसस्य लक्षणम् १६२
११९. अत्यन्ताभावस्य लक्षणम् १६२
१२०. अन्योन्याभावस्य लक्षणम् १६३
१२१. नित्यत्वस्य लक्षणम् १६४
१२२. अनित्यत्वस्य लक्षणम् १६४
१२३. परमाणोर्लक्षणम् १६५
१२४. अवयवस्य लक्षणम् १६७
१२५. कार्यस्य लक्षणम् १६८
१२६. अन्त्यावयविनो लक्षणम् १६८
१२७. शरीरस्य लक्षणम् १६८
१२८. भोगस्य लक्षणम् १६९
१२९. भोगायतनस्य लक्षणम् १७०
१३०. इन्द्रियस्य लक्षणम् १७०
१३१. विषयस्य लक्षणम् १७१
१३२. चतुर्विधतेजसो लक्षणम् १७१
१३३. उत्पत्तेर्लक्षणम् १७२
१३४. यौगपद्यस्य लक्षणम् १७३
१३५. क्षणस्य लक्षणम् १७३
१३६. क्षणिकस्य लक्षणम् १७३
१३७. स्थितेर्लक्षणम् १७४
१३८. विनाशस्य लक्षणम् १७४
१३९. क्षेत्रज्ञस्य लक्षणम् १७४
१४०. प्रत्यात्मनिष्ठत्वलक्षणम् १७५
१४१. सितादेर्लक्षणम् १७५
१४२. संयोगभेदस्त लक्षणम् १७५
१४३. परत्वापरत्वलक्षणम् १७६
१४४. स्मृतेर्लक्षणम् १७७
१४५. अनुभवस्य लक्षणम् १७९
१४६. प्रमाया लक्षणम् १७९
१४७. अप्रमाया लक्षणम् १८०
१४८. संशयस्य लक्षणम् १८१
१४९. विपर्ययस्य लक्षणम् १८१
१५०. प्रत्यक्षप्रमाया लक्षणम् १८२
१५१. अनुमितिप्रमाया लक्षणम् १८२
१५२. प्रमाणस्य लक्षणम् १८३
१५३. प्रत्यक्षप्रमाणस्य लक्षणम् १८५
१५४. सप्तप्रत्यक्षप्रमाणलक्षणम् १८५
१५५. अनुमानस्य लक्षणम् १८६
१५६. व्याप्तेर्लक्षणम् १८८
१५७. पक्षधर्मताया लक्षणम् १९०
१५८. साध्यस्य लक्षणम् १९१
१५९. लिङ्गस्य लक्षणम् १९२
१६०. उपाधेर्लक्षणम् १९४
१६१. केवलान्वयिनो लक्षणम् १९४
१६२. केवलव्यतिरेकिलक्षणम् १९५
१६३. अन्वयव्यतिरेकिलक्षणम् १९६
१६४. पक्षसपक्षविपक्षलक्षणम् १९८
१६५. स्वार्थपरार्थानुमानलक्षणम् १९९
१६६. शब्दस्यानुमानेऽन्तर्भावः १९९
१६७. प्रतिज्ञाया लक्षणम् २०४
१६८. हेतोर्लक्षणम् २०४
१६९. उदाहरणस्य लक्षणम् २०५
१७०. उपनयस्य लक्षणम् २०६
१७१. निगमनस्य लक्षणम् २०६
१७२. हेत्वाभासस्य लक्षणम् २०९
१७३. असिद्धेर्लक्षणम् २११
१७४. विरोधस्य लक्षणम् २१३
१७५. अनैकान्तिकत्वलक्षणम् २१४
१७६. अनध्यवसितत्वलक्षणम् २१५
१७७. कालात्ययापदिष्टत्वलक्षणम् २१६
१७८. प्रकरणसमस्य लक्षणम् २१७

१७९. तर्कस्य लक्षणम् २१७
१८०. स्वप्नस्य लक्षणम् २२०
१८१. निद्राया लक्षणम् २२२
१८२. निर्विकल्पकस्य लक्षणम् २२२
१८३. सविकल्पकस्य लक्षणम् २२४
१८४. प्रत्यभिज्ञाया लक्षणम् २२५
१८५. हानस्य लक्षणम् २२६
१८६. उपादानस्य लक्षणम् २२६
१८७. उपेक्षाया लक्षणम् २२६
१८८. ऊहस्य लक्षणम् २२७
१८९. अनध्यवसायस्य लक्षणम् २२७
१९०. सांसारिकसुखस्य लक्षणम् २२८
१९१. स्वर्गसुखस्य लक्षणम् २२८
१९२. सांसिद्धिकत्वस्य लक्षणम् २२९
१९३. नैमित्तिकत्वस्य लक्षणम् २२९
१९४. वेगस्य लक्षणम् २२९
१९५. भावनाया लक्षणम् २३०
१९६. स्थितिस्थापकस्य लक्षणम् २३०
१९७. अव्यापकत्वस्य लक्षणम् २३०
१९८. व्यापकत्वस्य लक्षणम् २३०
१९९. विहितत्वस्य लक्षणम् २३१
२००. निषिद्धत्वस्य लक्षणम् २३१
२०१. उदासीनत्वस्य लक्षणम् २३१
२०२. जातेर्लक्षणम् २३१
२०३. उपाधेर्लक्षणम् २३२
२०४. अन्धकारस्य लक्षणम् २३३
२०५. ज्ञानविषयत्वस्य लक्षणम् २३५
२०६. प्रमेयत्वस्य लक्षणम् २३६
२०७. सङ्ख्याया लक्षणम् २३६
२०८. कारणस्य लक्षणम् २३७
२०९. समवायिकारणलक्षणम् २३९
२१०. असमवायिकारणलक्षणम् २३९
२११. निमित्तकारणलक्षणम् २४०
२१२. मूर्त्तत्वस्य लक्षणम् २४०
२१३. अमूर्त्तत्वस्य लक्षणम् २४१
२१४. सामग्रीलक्षणम् २४२
२१५. उद्देशस्य लक्षणम् २४२
२१६. पृथिवीसमवेतगुणाः २४३
२१७. जलसमवेतगुणाः २४३
२१८. तेजःसमवेतगुणाः २४३
२१९. वायुसमवेतगुणाः २४३
२२०. आकाशसमवेतगुणाः २४४
२२१. कालदिक्समवेतगुणाः २४४
२२२. आत्मसमवेतगुणाः २४४
२२३. मनःसमवेतगुणाः २४५
२२४. कर्मणो लक्षणम् २४५
२२५. सामान्यस्य लक्षणम् २४५
२२६. विशेषस्य लक्षणम् २४५
२२७. समवायस्य लक्षणम् २४६
२२८. कार्यद्रव्यस्य लक्षणम् २४६
२२९. अकार्यद्रव्यस्य लक्षणम् २४६
२३०. द्रव्यविनाशस्य कारणम् २४६
२३१. गुणविनाशस्य कारणम् २४७
२३२. कर्मविनाशस्य कारणम् २४८
२३३. प्रगभावनाशस्य कारणम् २४८
२३४. अन्योन्याभावनाशकारणम् २४८
२३५. कार्योत्पत्तेः कारणम् २४९
२३६. वैशिष्ट्यस्य लक्षणम् २४९
२३७. विशेषणस्य लक्षणम् २५०
२३८. सामानाधिकरण्यम् २५०
२३९. उपलक्षणस्य लक्षणम् २५१
२४०. वैयाधिकरण्यलक्षणम् २५२
२४१. विभुत्वस्य लक्षणम् २५२
२४२. युतसिद्धेर्लक्षणम् २५३
२४३. अयुतसिद्धेर्लक्षणम् २५३
२४४. शास्त्रस्य लक्षणम् २५४
२४५. ग्रन्थस्य उपसंहारः २५७-२५८।

प्रश्नसूचीपत्रम्, पृ०१५

संस्कृतभाषायां देवनागरीलिप्या प्रश्नोत्तरेषु प्रश्नसूची

१. हेतवे इत्यादिमङ्गलश्लोको व्याख्यायताम्। हेतुपदेन जगतां कीदृशं कारणमुक्तम् ?३०

२. सप्तपदार्थीग्रन्थस्य ग्रन्थनपद्धतिः कीदृशी ? तत् विव्रियताम्। ३२

३. पदार्थमधिकृत्य दार्शनिकानां मतभेद उल्लेखनीयः।३३

४. पदार्थाः कति कानि च तेषां नामानि ? ३४

५. सप्तपदार्थानुद्दिश्य तेषां पौर्वापर्ये कारणमुल्लिख्य सप्तपदार्थस्य सार्थक्यं निरूपयत।३४

६. श्रीशिवादित्येन पदार्थशब्देन किमुच्यते ? कतिविधः तेनाभ्युपेतस्तत्सर्वं विशद्यताम्। ३४

७. सप्तपदार्थीग्रन्थस्य अनुबन्धचतुष्टयम् उल्लेखनीयम्।३५

८. द्रव्याणि कति कानि च तानि ? तेषां पौर्वापौर्यक्रमे किं कारणम् ? ३७

९. वैशेषिकनये को गुणः ? कतिविधश्च सः ? तस्य लक्षणमुल्लिख्य व्याख्यायताम्। ३८
गुणत्वजातिसिद्धौ प्रमाणं प्रदर्श्य गुणस्य लक्षणं निरूप्यताम्।३९

१०. किं कर्म ? तस्य नामतः कति भेदाः सन्ति ? ३९

११. गुणकर्मणोर्भेदं निरूपयत। ४०

१२. सर्वत्र वैशेषिकग्रन्थे किं सामान्यं त्रिविधमुक्तम् ? त्रिविधसामान्यस्य परिचयो देयः। ४१

१३. कथं विशेषा अनन्ता उच्यन्ते ? ४२

१४. समवायस्य एकत्वमनेकत्वं वाऽङ्गीकृतमिति निर्णीयताम्। ४३

१५. समवायस्य एकत्वमनेकत्वं वा ? एकत्वे जलादौ गन्धवत्त्वप्रसङ्गः अनेकत्वे च गौरवं स्यात् किमत्र समाधानम् ? ४३

१६. वैशेषिके समवायस्य कथमेकत्वं स्वीक्रियते,वायौ रूपवत्ताप्रतीतिः कथं न प्रमा ? ४४

१७. अभावः कतिविधः ? किञ्च तेषां स्वरूपम् ? ४५

१८. कथं परमाणुद्व्यणुके सिद्ध्यतः ? ४७

१९. नित्यायाः पृथिव्या अस्तित्वे प्रमाणं प्रदर्श्याऽनित्याया उत्पत्तिप्रक्रिया विव्रियताम्। ४७

२०. वैशेषिकदिशा स्वर्णस्य तैजसत्वे किं प्रमाणमिति स्फुटं प्रतिपाद्यताम्। ५१

२१. कथं वायुः सिद्ध्यति ? ५३

२२. वायोरप्रत्यक्षं चेत् तत् प्रसाध्यताम्। ५३

२३. केन विधिनानुमानेन वायोः सिद्धिः ? वैशेषिकरीत्या निरूप्यताम्। ५३

२४. वैशेषिकसरणीमनुसृत्य वायुः प्रत्यक्षो न वेति विचार्यताम्। ५३

२५. स्तिमितवायुः कुत्रान्तर्भूयते ? अत्र विषये शिवादित्यस्य किं मतम् ? ५४

२६. वायुपञ्चकं निरूपयत। ५५

२७. कथमाकाशस्यैकत्वेऽपि घटादिभेदादनन्त एव ? ५६

२८. कथं कालस्यैकत्वेऽपि उत्पत्त्यादिभेदव्यवहारः ? ५६

२९. का दिक् ? तस्याः कति भेदाः ? ५८

सप्तपदार्थी, for Sem.-V, DSE 1,पृ॰१६

३०. पृथिव्यादेः कति भेदाः ? ५९
३१. आत्मा कतिविधः ? प्रतिपाद्यताम्। ६०
३२. परमात्मा क्षेत्रज्ञश्चेत्येतयोर्भेदो निरूपणीयः। [উত্তর বাংলায়।] ६०
३३. मनसः कथमनन्तं सप्तपादर्थीकारेण दर्शितम् ? ६१
३४. चित्ररूपस्य सप्तपदार्थीकारमते सत्त्वं मतान्तरेण चासत्त्वं प्रतिपाद्यताम्। ६३
३५. चित्रं रूपमतिरिक्तमस्ति न वा ? अत्र पूर्वपक्षमुद्भाव्य सिद्धान्तः प्रदर्श्यताम्। ६३
३६. चित्रवर्णे रूपत्वं साधयत। ६३
३७. सप्तपदार्थीदिशा परिमाणस्य भेदानुल्लिख्य न्यायवैशेषिकमते तान् प्रतिपादयत। ६८
३८. वैशेषिकमते संयोगस्य लक्षणमुल्लिख्य सोदाहरणं सप्तपदार्थीदिशा भेदो निरूप्यताम्। ६९
३९. वैशेषिकमते किं विभागस्य लक्षणम् ? स कतिविधः ? ७१
४०. परत्वापरत्वयोः भेदो निरूपणीयः। ७३
४१. कानि प्रत्यक्षाप्रत्यक्षद्रव्याणि ? किञ्च प्रत्यक्षे प्रयोजकम् ? ७५
४२. किं नाम परार्थानुमानस्याङ्गानि ? तानि सोदाहरणं व्याख्याय निरूपयत। ७६
४३. 'तदाभासा' इत्यत्र तच्छब्देन किं विवक्षितम् ? इत्युल्लिख्य तद्भेदान् नामत लिखत। ७७
४४. वैशेषिकमते बाधसत्प्रतिपक्षयोर्हेत्वाभासत्वमस्ति न वा ? ७७
४५. निर्विकल्पकज्ञानं प्रमा अप्रमा वा ? ८१
४६. सुखस्य किं लक्षणम् ? कतिविधञ्च तत् ? ८३
४७. दुःखस्य किं लक्षणम् ? कतिविधञ्च तत् ? ८३
४८. इच्छायाः किं लक्षणम् ? कतिविधा च सा ? ८५
४९. को द्वेषः ? कतिविधश्च सः ? ८५
५०. किं गुरुत्वम् ? कतिविधं च तत् ? ८७
५१. धर्मस्य द्वैविध्यं किङ्नाम शिवादित्येनोक्तम् ? व्याख्यायताम्। ८९
५२. शब्दः कतिविधः कुत्र च स वर्त्तते ? कथं च तस्योत्पत्तिर्भवति ? ९१
५३. के गुणा अनित्यैकरूपाः ? के च नित्यानित्यरूपाः सन्ति ? ९१
५४. केषां गुणानाम् अव्यापकत्वं केषामुभयरूपत्वं वाश्रयव्यापकत्वम् ? व्याख्यायताम्। ९२
५५. उत्क्षेपणादयो विहितनिषिद्धोदासीनरूपाः इत्यस्याः पङ्क्तेः व्याख्या कार्या। ९३
५६. सप्तपदार्थीमुल्लिख्य अन्धकारस्यातिरिक्तं द्रव्यत्वं स्वीक्रियते न वेति विवृणुत। ९५
५७. शक्तेः सप्तपदार्थातिरिक्तपदार्थतेति कया युक्त्या कस्य मतम् ? कथं तन्निराकरणम् ? ९७
५८. वैशिष्ट्यस्यातिरिक्तपदार्थत्वं कथं न स्वीक्रियते ? ९७
५९. का नाम ज्ञातता ? केषां साभिमता ? तन्निराकरणं केन प्रकारेण कृतम् ? तत् सर्वमाचार्योक्तसरणीमनुसरता प्रतिपादनीयम्। ९९
६०. सादृश्यमतिरिक्तः पदार्थोऽस्ति न वा ? नास्ति चेत् कुत्र तस्यान्तर्भावः ? १०२
६१. वैशेषिकमते लघुत्वं कथं न गुणान्तरम् ? व्याख्यायताम्। १०३
६२. 'एवमन्यापि पदार्थस्य' इत्यादिग्रन्थस्य क आशयः ? विव्रियताम्। १०४

६३. नित्यानां कारणत्वमिति पङ्क्तौ पारिमाण्डल्यं प्रक्षिप्य अनूद्य विस्पष्टं व्याख्यायताम्। १०४
६४. निःश्रेयसपदस्य यौगिकार्थं विलिख्य अपवर्गशब्देन तस्य तात्पर्यं परिष्कार्यम्। १०६
६५. वैशेषिकमते कीदृशो मोक्षः ? विचार्यताम्। १०७
६६. कथमेकविंशतिप्रकारं दुःखं सप्तपदार्थीकारेण प्रदर्शितम्? १०८
६७. द्रव्यस्य स्वरूपं सामान्यलक्षणं च प्रतिपाद्य भेदो नामत उल्लेखनीयः। १०९
६८. केषु द्रव्येषु के च गुणा वर्त्तन्ते? ११०
६९. किं गुणस्य लक्षणम्? १११
७०. किं कर्म? तस्य परिचयो देयः। ११२
७१. सामान्यं नाम पदार्थः कथमङ्गीक्रियते? सामान्यस्य लक्षणं तावत् किम्? प्रतिपदव्यावृत्तिपूर्वकं सामान्यलक्षणं विशद्यताम्। सामान्यं कुत्रास्ते? सामान्ये सामान्यस्वीकारे का हानिर्जायते? ११४
७२. किं नाम सामान्यम्? कतिविधं च तत्? सामान्ये सामान्यमस्ति न वा? कस्मिन् पदार्थे सामान्यं वर्त्तत इति निरूपणीयम्। ११४
७३. विशेषलक्षणं विस्पष्टं विव्रियताम्। विशेषस्य कुत्र अवस्थितिः? तन्नामत उल्लेखनीयम्। विशेषस्वीकारः किं प्रयोजनम्? ११७
७४. सामान्येन सह विशेषस्य को भेदः? [উত্তর বাংলায়।] ११८
७५. समवायस्य किं लक्षणम्?तस्यास्तित्वे किं मानम्?कथं समवायस्य भेदो नास्ति? १२०
७६. अभावलक्षणे प्रतियोगीति उपात्तं तत्पदस्य तत्सम्बन्धस्य पदान्तरस्य परिचयो देयः।१२२
७७. गन्धवती च पृथिवी इति पङ्क्तेर्व्याख्या कार्या। १२४
७८. पृथिव्या लक्षणं प्रतिपाद्य तस्या भेदान् प्रदर्शयत। १२४
७९. पृथिवीत्वजातौ किं मानम्? पाषाणादौ पृथिवीत्वं कथं सिद्ध्यति? विवृणुत। १२५
८०. अपां किं लक्षणम्? कतिविधाः च ताः? भेदप्रभेदप्रदर्शनपूर्वकं सर्वं निरूपयत। १२६
८१. अपां स्वरूपं निरूप्य अप्सु रसस्पर्शस्नेहद्रवत्वानि च कीदृशानीति विवेचयत। १२६
८२. शीतस्पर्शवत्य आपः इत्यस्याः पङ्क्तेर्व्याख्या कार्या। १२६
८३. आप्त्वजातिसाधनरीतिः प्रदर्शनीया। १२६
८४. तेजसः किं लक्षणम्? तत् कतिविधम्? भेदप्रभेदप्रदर्शनपूर्वकं सर्वं निरूपयत। १२७
८५. तेजसो लक्षणं स्पर्शरूपद्रवत्वानि च प्रतिपाद्य सुवर्णस्य तैजसत्वे प्रमाणं स्पष्टं कुरु। १२८
८६. तेजसः संक्षेपतो व्याख्या करणीया। १२८
८७. वायोः किं लक्षणम्? स कतिविधः? भेदप्रभेदप्रदर्शनपूर्वकं सर्वं निरूपयत। १२९
८८. वायोः स्वरूपं सभेदं निरूप्य प्रत्यक्षत्वमनुमेयत्वं वेति विविच्यताम्। १२९
८९. आकाशलक्षणं व्याख्यायताम्। तेन आकाशस्य किं वैधर्म्यं साधर्म्यञ्च बोध्यते? १३२
९०. आकाशस्य स्वरूपं निरूप्य सत्त्वे प्रमाणं निर्दिश्यताम्। १३२
९१. वैशेषिकमते कथम् आकाशः सिद्ध्यति? तस्य विशेषान् निरूपयत। १३२
९२. कालस्य सत्त्वे किं प्रमाणम्? इति सप्तपदार्थीदिशा दर्शयत। १३४

९३. दिशो लक्षणं कृत्वा तस्यैकत्वं साधयत। १३६

९४. कालदिग्द्रव्ययोः सत्त्वे प्रमाणं प्रदर्श्य स्वरूपं विशद्यताम्। १३६

९५. 'बुद्धिगुण आत्मा' इति पङ्क्तेर्व्याख्या कार्या। १३७

९६. आत्मनो लक्षणं प्रदर्श्य जीवेश्वरयोर्भेदः सम्यग्विविच्यताम्। १३७

९७. आत्मत्वजातिसाधनप्रणाली कीदृशी? सा जातिः क्षेत्रज्ञेश्वसाधारणी न वा? आद्ये ईश्वरे कथं न सुखाद्युत्पत्तिः? द्वितीये च परमात्मनो दशमद्रव्यत्वापत्तिः कुतो न? १३८

९८. आत्मसद्भावे किम्प्रमाणमिति विविच्योपपाद्यताम्। १३८

९९. लक्षणमुक्त्वा मनः सम्यक् निरूप्यताम्। किमिदं मनस्तत्सिद्धिः कथम्? मनोऽणु विभु वा सङ्कोचविकाशशीलं मध्यमपरिमाणं वा? १३९

१००. मनसो लक्षणं प्रतिपाद्य परिमाणं च कीदृशमिति न्यायवैशेषिकपथेन साधय। १३९

१०१. रूपस्य निरूपणं कुरुत। १४०

१०२. रसस्य निरूपणं कुरुत। १४१

१०३. रूपं रसश्चेत्येतयोर्भेदो निरूपणीयः।[উত্তর বাংলায়।] १४१

१०४. गन्धस्य निरूपणं कुरुत। १४२

१०५. स्पर्शस्य निरूपणं कुरुत। १४३

१०६. का सङ्ख्या? सा कतिविधा? १४४

१०७. वैशेषिकमते परिमाणलक्षणमुल्लिख्य तद्भेदो निरूप्यताम्। १४४

१०८. कं पृथक्त्वम्? तस्य परिचयो देयः। १४६

१०९. संयोगलक्षणं तद्भेदांश्च सोदाहरणं प्रदर्शयत। १४६

११०. विभागगलक्षणं तद्भेदांश्च सोदाहरणं प्रदर्शयत। १४७

१११. किं परत्वापरत्वयोर्लक्षणम्? पदकृत्यं च किम्? के च तयोर्भेदाः? १४८

११२. आत्माश्रयः प्रकाशो बुद्धिः इत्यस्याः पङ्क्तेर्व्याख्या कार्या। १४९

११३. का नाम बुद्धिः? कस्मिन् पदार्थे तस्या अन्तर्भावः? सा किं नित्या अनित्या वा? १४९

११४. सुखस्य लक्षणं पदकृत्यञ्च निरूपयत। १५१

११५. दुःखस्य लक्षणं पदकृत्यञ्च निरूपयत। १५१

११६. इच्छाया लक्षणं पदकृत्यञ्च निरूपयत। इच्छाया भेदश्चेद् उल्लेखनीयः। १५२

११७. द्वेषस्य लक्षणं निरूपयत। १५२

११८. कः प्रयत्नः? कतिविधश्च सः? १५३

११९. गुरुत्वस्य किं लक्षणम्? सपदकृत्यं व्याख्यायताम्। कुत्र च तत् वर्त्तते? १५४

१२०. द्रवत्वस्य किं लक्षणं सपदकृत्यं व्याख्यायताम्। कुत्र तत् वर्त्तते? के च भेदाः? १५४

१२१. स्नेहस्य किं लक्षणं सपदकृत्यं व्याख्यायताम्। कुत्र च स तिष्ठति? १५४

१२२. संस्कारस्य किं लक्षणम्? स कतिविधः? सर्वं स्पष्टं विव्रियताम्। १५५

१२३. धर्माख्यमदृष्टं विशकलय्य निरूपयत। तदुत्पादकं च प्रदर्शयत। १५६

१२४. कोऽधर्मः इति विशकलय्य निरूपयत। तदुत्पादकं च प्रदर्शयत। १५६

प्रश्नसूचीपत्रम्, पृ०१९


१२५. किं शब्दलक्षणम्? कतिविधश्च सः। शब्दस्य विशेषगुणत्वे मानमुत्पत्तिश्च कीदृशी?१५७

१२६. किं कर्मलक्षणम्? तस्य भेदः प्रत्येकं लक्षणमुल्लिख्य सोदाहरणं व्याख्यायताम्।१६०

१२७. कः प्रागभावः? किमनादित्वम्? सोदाहरणं परिष्क्रियताम्। १६१

१२८. कः प्रध्वंसाभावः? सोदाहरणं परिष्क्रियताम्। १६२

१२९. किमनन्तत्वम्? सोदाहरणं द्वित्रैर्वाक्यैः परिष्क्रियताम्। १६२

१३०. कोऽत्यन्ताभावः? सोदाहरणं परिष्क्रियताम्। १६२

१३१. कोऽन्योन्याभावः? अत्यन्ताभावेन सह तस्य को भेदः? १६३

१३२. किं नित्यत्वम्? सोदाहरणं द्वित्रैर्वाक्यैः परिष्क्रियताम्। १६५

१३३. परमाणुसिद्धौ का वचोयुक्तिः? अथवा परमाणुसाधनरीतिः का? १६६

१३४. वैशेषिकदर्शने कः परमाणुकारणतावादः? विव्रियताम्। १६६

१३५. किं शरीरत्वम्? शरीरत्वं जातिः स्वीक्रियते न वा? शरीरं कतिविधम्? १६९

१३६. किं नामेन्द्रियत्वम्? कथं नेन्द्रियत्वं जातिः? १७१

१३७. विषयो निरूप्यताम्। १७१

१३८. चतुर्विधं तेजो निरूपणीयम्। १७२

१३९. वैशेषिकमते का स्मृतिः? सप्तपदार्थीकृता च तस्याः किं लक्षणं कृतम्? १७८

१४०. यथार्थानुभवस्य कति भेदाः? प्रमाख्यायां शिवादित्यस्य च किं मतम्? १८०

१४१. का अप्रमा? तज्जनकं च किम्? अप्रमाभेदौ कौ ? १८०

१४२. सप्तपदार्थीकारकृतं किम् अप्रमायाः लक्षणम्? सपदकृत्यं व्याख्यायताम्। १८०

१४३. सप्तपदार्थीकारदिशा कः संशयः? किञ्च तस्य सम्पूर्णं लक्षणम्? कथं स जायते? १८१

१४४. सप्तपदार्थीकारदिशा कः विपर्ययः? १८२

१४५. सप्तपदार्थीकारदिशा प्रत्यक्षप्रमाया लक्षणं किम्? सपदकृत्यं व्याख्यायताम्। १८२

१४६. सप्तपदार्थीदिशा का अनुमितिप्रमा? १८२

१४७. करणस्य किं लक्षणम्? शिवादित्यमिश्रदिशा व्याख्यायताम्। १८३

१४८. किं प्रमाणस्य लक्षणम्? तद् व्याख्यायताम्। १८३

१४९. सप्तपदार्थीदिशा किं प्रत्यक्षप्रमाणस्य लक्षणम्? कश्च तस्यार्थः? १८५

१५०. कथं शिवादित्येन प्रत्यक्षप्रमाणस्य किं लक्षणमुक्तमिति व्याख्यायताम्। १८५

१५१. वैशेषिकसूत्रकारादिमतेऽनुमानं कतिविधम्? तन्मते का चानुमानप्रणाली? १८६

१५२. अनुमानं व्याख्याय तस्य पञ्चावयवान् निरूपयत। १८७

१५३. अनुमानं किमुच्यते? कथं ततो ज्ञानं जायते? सर्वं साङ्गोपाङ्गं विस्पष्टं निरूप्यताम्। १८७

१५४. 'उपाध्यभावविशिष्टः सम्बन्धः' इत्यत्र सप्तपदार्थीकारस्याशयः व्याख्यायताम्। १८८

१५५. व्याप्तिलक्षणे उपाध्यभावेत्यस्य किं तात्पर्यम्? व्याख्यायताम्। १९०

१५६. का नाम पक्षधर्मता ? कश्च पक्षः? कथञ्चानुमितिर्भवेत्? १९१

१५७. सद्धेतोः पञ्चरूपोपपन्नत्वं दर्शयत। १९३

१५८. किं लिङ्गस्य लक्षणम्? सोदाहरणं विवृणुत। १९३

१५९. 'व्यापकं साध्यम्' इत्युक्तं शिवादित्यमिश्रेण। व्याप्यो व्यापकश्च निरूप्यताम्।१९३

१६०. उपाधिलक्षणमुल्लिख्य सपदकृत्यं व्याख्यायताम्। १९४

१६१. केवलान्वयिनः किं लक्षणम्? सपदकृत्यं निरूप्यताम्। १९४

१६२. केवलव्यतिरेकिनो हेतोः किं लक्षणम्? सपदकृत्यं निरूप्यताम्। १९६

१६३. अन्वयव्यतिरेकिणो हेतोः किं लक्षणम्? सपदकृत्यं निरूप्यताम्। १९७

१६४. व्याप्तिभेदात् अनुमानभेदान् निरूपयत। १९७

१६५. पक्षसपक्षविपक्षाणां किं लक्षणम्? सोदाहरणं व्याख्यायताम्। १९८

१६६. स्वार्थपरार्थयोः कोऽर्थस्तत् निरूपयत। २००

१६७. स्वार्थानुमानं व्याख्यायताम्। २००

१६८. परार्थानुमानं व्याख्यायताम्। २००

१६९. शब्दादीनामप्यनुमानेऽन्तर्भावः समानविधित्वादिति वैशेषिकसूत्रभाष्यं प्रमाणप्रयोगपूर्वकं व्याख्यायताम्। २०१

१७०. वैशेषिकमते उपमानस्य प्रमाणान्तरत्वं खण्ड्यताम्। २०२

१७१. वैशेषिकमतेऽर्थापत्तेः प्रमाणान्तरत्वं खण्ड्यताम्। २०३

१७२. कथं पञ्चावयवायानां न्यायत्वम्? के पञ्चावयवाः? तेषां सोदाहरणं विवरणं देयम्। २०७

१७३. वैशेषिकमते हेत्वाभासस्य कोऽर्थः? किञ्च लक्षणम्? शिवादित्यमते विवृणुत। २०९

१७४. किं हेत्वाभासलक्षणम्? कथं वा बाधभ्रमे तस्य नाव्याप्तिः? २१०
वैशेषिकसूत्रभाष्यदिशा सभेदमसिद्धत्वं निरूपयतु।२११

१७५. सप्तपदार्थीग्रन्थदिशा असिद्धत्वं निरूपयतु। २१२

१७६. वैशेषिकमते सप्तपदार्थीग्रन्थदिशा च विरुद्धत्वं निरूपयतु। २१२

१७७. न्यायवैशेषिकमते सप्तपदार्थीग्रन्थदिशा चानैकान्तिकत्वं निरूपयतु। २१४

१७८. वैशेषिकमते सप्तपदार्थीग्रन्थदिशा चानध्यवसितत्वं निरूपयतु। २१५

१७९. प्राचीनन्यायमते सप्तपदार्थीग्रन्थदिशा च कालात्ययापदिष्टं हेत्वाभासं निरूपयतु। २१६

१८०. न्यायमते सप्तपदार्थीग्रन्थदिशा च प्रकरणसमं हेत्वाभासं निरूपयतु। २१७

१८१. सप्तपदार्थ्यां तर्कः क्वान्तर्भूतः? को नाम तर्कः? कथं तस्य प्रमाणग्राह्यत्वं प्रमाणान्तरत्वं वा नास्ति? तत्त्वज्ञानं प्रति किमस्योपयोगित्वम्? सर्वं विशद्य समाधेयम्। २१९

१८२. वैशेषिकमते कः स्वप्नः? शिवादित्यस्तद् ज्ञानं क्वान्तर्भावितम्? २२०

१८३. सप्तपदार्थीकारस्य मते का नाम निद्रा? व्याख्यायताम्। २२२

१८४. निर्विकल्पकस्य स्वरूपं व्याख्यायताम्। २२३

१८५. सविकल्पकस्य स्वरूपं व्याख्यायताम्। २२५

१८६. सोदाहरणं प्रत्यभिज्ञानं व्याख्यायताम्। २२५

१८७. किं हानज्ञानम्? एतद्विषये किमुक्तं सप्तपदार्थीकारेण? २२६

१८८. किमुपादानज्ञानम्? एतद्विषये किमुक्तं सप्तपदार्थीकारेण? २२६

१८९. का उपेक्षाबुद्धिः? एतद्विषये किमुक्तं सप्तपदार्थीकारेण? २२६

प्रश्नसूचीपत्रम्, पृ॰२१

१९०. ऊहलक्षणं सोदाहरणं व्याख्याय परिष्क्रियताम्। २२७

१९१. कोऽनध्यवसायः ? संशये तस्यान्तर्भावो युक्तियुक्तं न वेत्यालोच्यताम्। २२७

१९२. स्वर्गस्य किं लक्षणम्? स्वर्गो वैशेषिकसम्मतो न वा? तत्र पदार्थानां साधर्म्यवैधर्म्य-ज्ञानान्निःश्रेयसं भवतीति कणादमतेन विरोधो न वा? सर्वमेतत् परिष्कृत्य विव्रियताम्। २२९

१९३. जातिः कीदृशः कणादेन प्रोक्तः ? २३२

१९४. किं जातेर्लक्षणम्? के च तस्या बाधकाः ? २३२

१९५. वैशेषिकमते तमसो दशमत्वमाशङ्क्य निराक्रयताम्। २३४

१९६. अन्धकारस्यातिरिक्तद्रव्यत्वमस्ति न वेति विचार्य प्रकृते कोऽन्धकारः उच्याताम्।२३४

१९७. द्रव्यलक्षणं प्रतिपाद्यान्धकारो दशमं द्रव्यं न वेति शिवादित्यमतं लिखत। २३४

१९८. ज्ञानसम्बन्धो ज्ञानविषयत्वम् इति पङ्क्तिः सोपष्टम्भं व्याख्येया। २३५

१९९. वैशेषिकमते किं प्रमेयम्? वैशेषिकमते तत् परिष्कुरु। २३६

२००. किं कारणलक्षणम्? कानि चान्यथासिद्धिलक्षणानि? सोदाहरणं तानि विवृणुताम्।२३७

२०१. कारणस्य भेदान् विलिख्य लक्षणोदाहरणप्रदर्शनपूर्वकं विवृणुताम्। २४०

२०२. शिवादित्यमतेन द्रव्यनाशे किं कारणम्? तत् लिख्यताम्। २४७

२०३. शिवादित्यमतेन वैशेषिकदिशा गुणनाशे किं कारणम्? तत् उल्लिख्यताम्। २४८

२०४. शिवादित्येन सामानाधिकरण्यस्य किं लक्षणमुक्तम्? सोदाहरणं व्याख्यायताम्। २५१

२०५. विशेषणोपलक्षणयोः को भेदः ? शिवादित्यमतेन लिखत। २५२

२०६. वैयाधिकरणस्य कोऽर्थः स्वीकृतः ? किं वा शिवादित्यमिश्र आह? २५२

२०७. वैशेषिकमते का अयुतसिद्धिः ? सोदाहरणं विवृणु। २५४

२०८. शिवादित्यदिशा वैशेषिकदर्शनानुसारं मोक्षप्राप्तिः कथं भवतीति निरूप्यताम्। २५५

२०९. सप्तद्वीपा धरेति सम्पूर्णा कारिकामुल्लिख्य सरलार्थः प्रतिपादनीयः। २५८

२१०. सप्तपदार्थीति व्युत्पाद्य वैशेषिकमते के सप्तपदार्था भवन्तीत्युल्लेखनीयम्। २५८|

निर्घण्टः सशब्दकोशः--Index-cum-glossary २५९ -२६२

Question with answer-hint on
IA Section-A Unit-II A.M.: 10 २६३
CU 2020 TH= A.M.: 65 २६४|